

जलवायु संकेतक और सतत् विकास पर रपिपोर्ट: डब्ल्यूएमओ

प्रलिमिंस के लिये:

वशिव मौसम वजिज्ञान संगठन, संयुक्त राष्ट्र महासभा, सतत् विकास लक्ष्य, अल नीनो, जलवायु संकेतक और सतत् विकास पर रपिपोर्ट

मेन्स के लिये:

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव एवं समाधान

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [वशिव मौसम वजिज्ञान संगठन](#) (World Meteorological Organization- WMO) ने [जलवायु संकेतकों और सतत् विकास: अंतरसंबंधों का प्रदर्शन](#) (Climate Indicators and Sustainable Development: Demonstrating the Interconnection) पर एक नई रपिपोर्ट प्रकाशित की है।

- डब्ल्यूएमओ ने सात जलवायु संकेतकों (कार्बन डाइऑक्साइड (CO₂) सांद्रता, तापमान, [महासागरीय अम्लीकरण](#) और गर्मी, समुद्री बर्फ की सीमा, ग्लेशियर का पघिलना तथा [समुद्र के स्तर में वृद्धि](#)) का अध्ययन किया।
- इसका प्रकाशन [संयुक्त राष्ट्र महासभा](#) (United Nations General Assembly) के वार्षिक सत्र और सितंबर 2021 में [सतत् विकास लक्ष्यों](#) (Sustainable Development Goal-SDG) के कार्य क्षेत्र के साथ मेल खाता है, जो एसडीजी पर कार्रवाई में तेजी लाने के लिये समर्पित है।



प्रमुख बडि

- उद्देश्य:
 - सतत् विकास के एजेंडे में योगदान करना और वैश्विक नेताओं को साहसिक जलवायु कार्रवाई करने के लिये प्रेरित करना।

■ महत्त्व:

- इससे **जलवायु परिवर्तन**, गरीबी, असमानता और पर्यावरणीय गतिवट, जलवायु तथा अंतरराष्ट्रीय विकास के बीच संबंधों को समझने में सहायता मिलती है।
- बढ़ते तापमान के परिणामस्वरूप वैश्विक और क्षेत्रीय परिवर्तन होंगे, जिससे वर्षा के पैटर्न तथा कृषि मौसम में बदलाव आएगा। **अल नीनो** (El Niño) की घटनाओं की तीव्रता भी अधिक सूखा एवं बाढ़ की स्थिति पैदा कर रही है।

■ कार्बन डाइआक्साइड का बढ़ता संकेंद्रण:

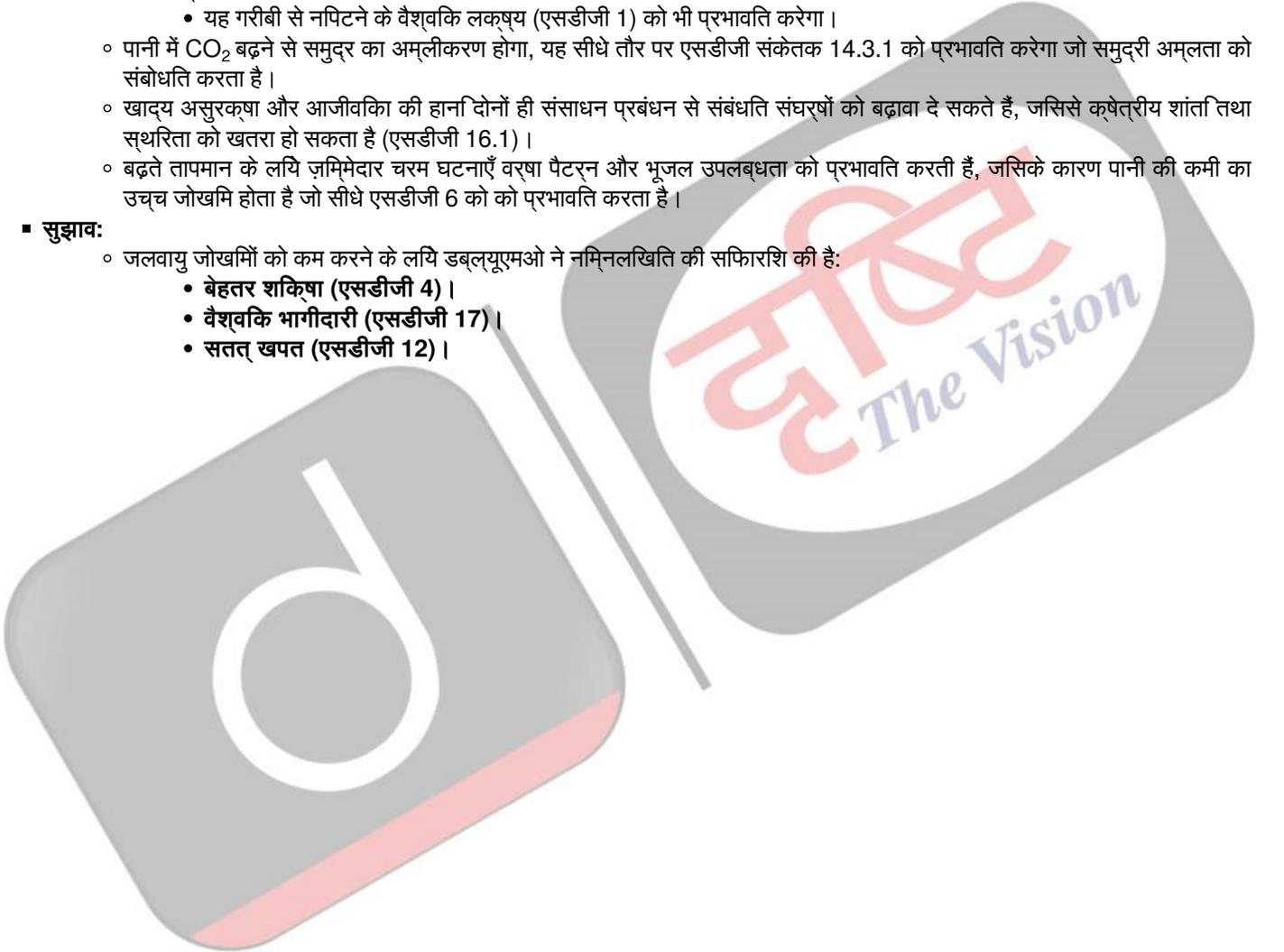
- संयुक्त राष्ट्र के सभी 17 एसडीजी लक्ष्यों को CO₂ की बढ़ती सांद्रता प्रभावित करेगी।
- मानव गतिविधियों के कारण बढ़ती CO₂ सांद्रता वैश्विक जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारक है।

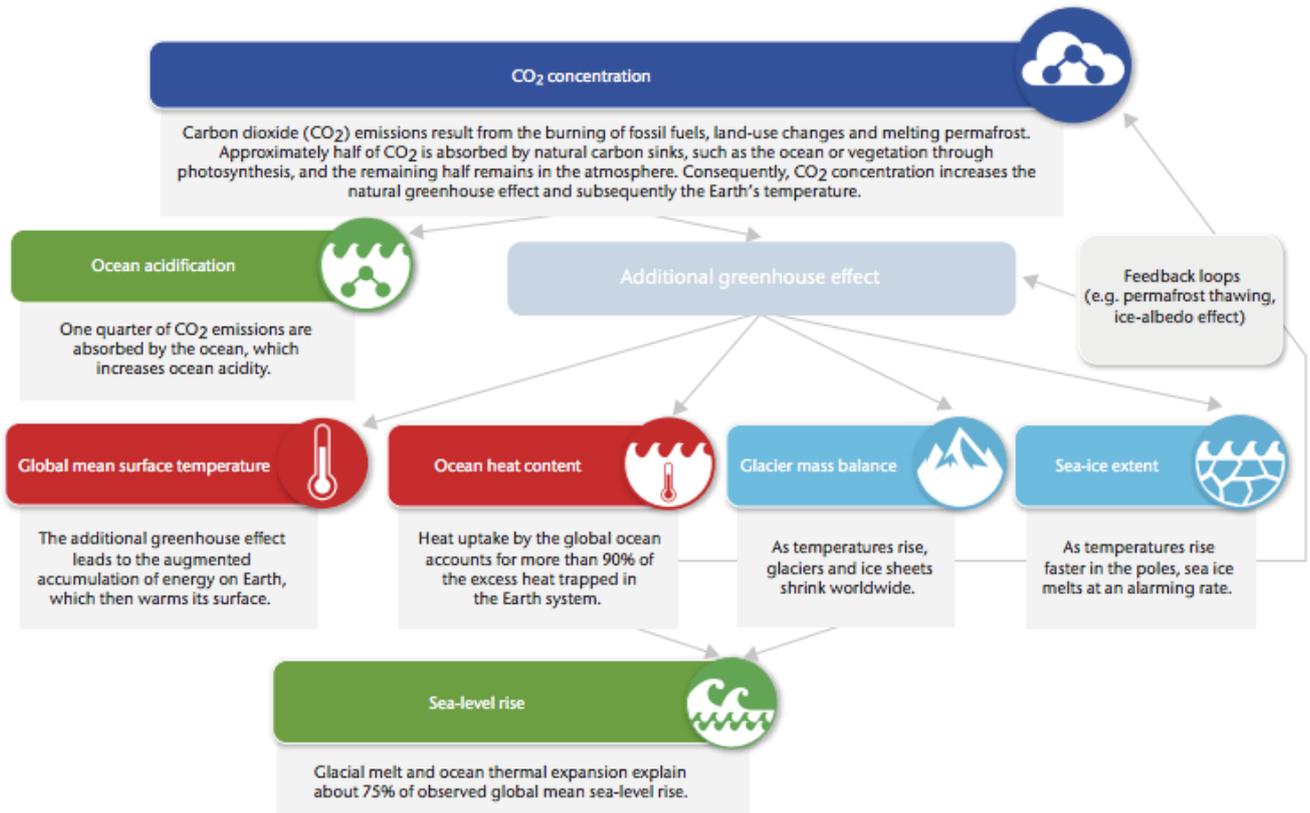
■ एसडीजी पर प्रभाव:

- अगर बढ़ते CO₂ की सांद्रता और वैश्विक तापमान को अनयंत्रित छोड़ दिया जाता है तो इससे एसडीजी 13 के अंतर्गत जलवायु परिवर्तन से निपटने के प्रयासों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
 - यह वर्ष 2030 तक एसडीजी 13 के अलावा अन्य 16 एसडीजी की उपलब्धता के लिये भी खतरा पैदा कर सकता है।
- ऐसा इसलिए है क्योंकि अनयंत्रित बढ़ता CO₂ उत्सर्जन परोक्ष रूप से शेष छह (तापमान, महासागरीय अम्लीकरण और गर्मी, समुद्री बर्फ की सीमा, ग्लेशियर पिघलना और समुद्र-स्तर में वृद्धि) जलवायु संकेतकों से संबंधित जोखिमों के लिये ज़िम्मेदार होगा।
- उदाहरण के लिये वातावरण में CO₂ की बढ़ती सांद्रता से पोषक तत्वों की मात्रा में कमी आएगी, जिससे खाद्य सुरक्षा या एसडीजी संकेतक 2.1.2 प्रभावित होगा।
 - यह गरीबी से निपटने के वैश्विक लक्ष्य (एसडीजी 1) को भी प्रभावित करेगा।
- पानी में CO₂ बढ़ने से समुद्र का अम्लीकरण होगा, यह सीधे तौर पर एसडीजी संकेतक 14.3.1 को प्रभावित करेगा जो समुद्री अम्लता को संबोधित करता है।
- खाद्य असुरक्षा और आजीविका की हानि दोनों ही संसाधन प्रबंधन से संबंधित संघर्षों को बढ़ावा दे सकते हैं, जिससे क्षेत्रीय शांति तथा स्थिरता को खतरा हो सकता है (एसडीजी 16.1)।
- बढ़ते तापमान के लिये ज़िम्मेदार चरम घटनाएँ वर्षा पैटर्न और भूजल उपलब्धता को प्रभावित करती हैं, जिसके कारण पानी की कमी का उच्च जोखिम होता है जो सीधे एसडीजी 6 को प्रभावित करता है।

■ सुझाव:

- जलवायु जोखिमों को कम करने के लिये डब्ल्यूएमओ ने नमिनलखिति की सफ़ारिश की है:
 - बेहतर शिक्षा (एसडीजी 4)।
 - वैश्विक भागीदारी (एसडीजी 17)।
 - सतत् खपत (एसडीजी 12)।





स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस